बाल्यावस्था में शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास

Childhood - with respect to Physical, Mental, emotional & & Social development.

बाल्यावस्था में शारीरिक विकास :-

व्यक्ति के विकास में बाल्यावस्था में शारीरिक विकास का बहुत महत्व है। सामान्य रूप में यदि हम देखें तो यह स्पष्ट होता है कि शारीरिक विकास के अन्तर्गत बालक का कद, भार, शरीर का विकास, लम्बाई आदि आते हैं। बाह्य अंगों के साथ-साथ आंतरिक अंगों का भी विकास होता है और इनका उत्तम प्रकार से विकास बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निर्धारित करता है। बाल्यावस्था में शारीरिक विकास निम्न प्रकार से होता है -

भार - इस अवस्था में बालिकाओं का भार बालकों की अपेक्षा अधिक होता है क्योंकि बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा किशोरावस्था जल्दी आ जाती है। बालिकाओं के वजन में 9 से 12 वर्ष के बीच वृद्धि की दर तीव्र रहती है और प्रतिवर्ष लगभग 14 पौण्ड वजन (.4508) बढ़ता है। इसके विपरीत बालकों का वजन कम बढ़ता है।

30-42 cm ~~[illegible]~~ औसत लम्बाई में वृद्धि होती है।
बाल्यावस्था में शरीर की ल० प्रत्येक वर्ष 5 से 7 cm की गति से बढ़ती है। इस प्रकार सम्पूर्ण बाल्यावस्था में 30-42

लम्बाई - लम्बाई में होने वाली वृद्धि पर वैयक्तिक भिन्नताओं, संतुलित भोजन, पर्यावरण, बीमारी एवं आनुवांशिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। इस अवस्था में लम्बाई धीमी गति से बढ़ती है तथा बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की लम्बाई अधिक बढ़ती है।

हड्डियाँ - इस अवस्था में आते-आते हड्डियों की संख्या में वृद्धि हो जाती है तथा इनकी संख्या 270 से बढ़कर 350 हो जाती है। बाल्यावस्था में बालक एवं बालिकाओं की हड्डियों में दृढ़ता आनी प्रारम्भ हो जाती है।

(21-28)

दाँत → लगभग 6-7 वर्ष में बालक एवं बालिकाओं के दूध के दाँत टूटने लगते हैं तथा उनके स्थान पर स्थाई दाँत निकलने लगते हैं तथा 12-13 वर्ष तक सभी स्थाई दाँत निकल आते हैं।

अन्य अंगों का विकास → बाल्यावस्था के प्रारम्भ से लेकर, अंत तक बालक एवं बालिकाओं के सभी अंगों का ~~अग~~ लगभग पूर्ण विकास हो जाता है। बाल्यावस्था में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में विकास प्रक्रिया तीव्र गति से होती है।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास

बालक का मानसिक विकास बाल्यावस्था में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। बाल्यावस्था में मानसिक विकास से तात्पर्य बालक की सोचने, समझने, स्मरण करने, विचार करने तथा समस्या समाधान करने, ध्यान लगाने की शक्ति, प्रत्यक्ष ज्ञान और संकल्पना, जिज्ञासा एवं चिंतन आदि से है। बाल्यावस्था में मानसिक योग्यताओं का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है। बालक की मानसिक विशेषताओं को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है।-

→ बाल्यावस्था के प्रथम वर्ष में अर्थात छठे वर्ष में बालक सरल प्रश्नों के उत्तर दे सकता है। बिना रुके 15 तक गिनती सुना सकता है। समाचार पत्रों में बने चित्रों के नाम बता सकता है।

→ सातवे वर्ष में छोटी-छोटी घटनाओं का वर्णन करने में सक्षम होता है तथा विभिन्न वस्तुओं में समानता एवं अंतर बता सकता है।

→ आठवे वर्ष में 17-18 शब्दों को वाक्यों को दुहराने के साथ छोटी-छोटी कहानियों एवं कविताओं को कंठस्थ करके सुनाने की क्षमता विकसित हो जाती है।

→ नौवें वर्ष में दिन, तारीख बताने के साथ पैसे गिनने की योग्यता उसमें आ जाती है।

- दसवें वर्ष में बालक 3-4 मिनट में 60-70 शब्द कह पाने में समर्थ हो जाता है।
- ग्यारहवें वर्ष में बालक में तर्क, जिज्ञासा एवं निरीक्षण शक्ति का विकास हो जाता है। वह प्रत्यक्ष ज्ञान एवं निरीक्षण द्वारा वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
- बारहवें वर्ष में बच्चा विभिन्न परिस्थितियों की वास्तविकता को जानने का प्रयास करता है। इसमें विवेक एवं बुद्धि होने के कारण दूसरों को सलाह दे सकता है।
- बाल्यावस्था बालक के विकास की महत्वपूर्ण अवस्था है इस अवस्था में अभिभावकों एवं शिक्षकों को बालक के प्रति ज्यादा सजग रहने की आवश्यकता है क्योंकि यह काल ऐसा होता है जिसमें बालक का मानसिक विकास पूर्णता की कगार पर होता है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास

बालक की बाल्यावस्था को संवेगात्मक विकास का अनोखा काल माना जाता है। सम्पूर्ण बाल्यावस्था में बालक के संवेगों में अस्थिरता देखने को मिलती है। बाल्यावस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति पर विशिष्ट प्रकार से होने लगती है। संवेगों में सामाजिकता का भाव आने से समाज के अनुकूल व्यवहार करने के लिए प्रेरित होने लगता है। इस प्रकार वह संवेगों की अभिव्यक्ति पर नियंत्रण करना सीख जाता है। भाषा ज्ञान सुदृढ होने से वह अपने भावों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करना प्रारम्भ कर देता है। इसके साथ ही साथ बालक के अंदर भय के संवेग सक्रिय हो जाते हैं परन्तु उसमें उत्पन्न भय शैशवावस्था से भिन्न होता है। यह भय उसके भविष्य में सफलता की चिंता, अभिभावकों एवं शिक्षकों द्वारा कड़े व्यवहार से जुड़ा होता है।

शैशवावस्था में बालक के संवेगात्मक व्यवहार में आंधी तूफान जैसी स्थिति होती है और वह सामान्यतः रोना चीखना चिल्लाना जैसी गत्यात्मक क्रियाओं से अभिव्यक्त होते हैं परन्तु बाल्यावस्था में विशेषतः बाल्यावस्था के अंतिम वर्षों में बालक अपने

वुडवर्थ ने - संवेग को मन की उत्तेजित अवस्था कहा है।
जरसील्ड → संवेग शब्द किसी प्रकार से आवेश में आने, भड़क उठने अथवा उत्तेजित होने की दशा को सूचित करता है।

संवेगों को उचित माध्यम से अभिव्यक्त करने में समर्थ हो जाते हैं। वह संवेगात्मक रूप से कुछ स्थिर होने लगते हैं, क्योंकि इस अवस्था तक बालक में भाषा का पूर्ण विकास हो जाता है एवं वे कुछ सामाजिक हो जाते हैं।

जैसे → शैशवावस्था के बच्चे अपने साथियों के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति उन्हें स्पर्श करके, मुस्कराकर अथवा शब्दों द्वारा करते हैं परन्तु बाल्यावस्था के बच्चे उनके साथ रहने, उनके सुख - दुख में शामिल होने और उनकी सहायता करने के द्वारा करते हैं। इस आयु के बच्चों में स्वतन्त्र रहने और स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की प्रवृत्ति होती है, इसमें बाधा आने पर उन्हें क्रोध आता है। इस आयु के बच्चे एक दूसरे से ईर्ष्या भी करने लगते हैं विशेषकर पढ़ने, खेलने एवं अन्य अच्छे कार्यों में आगे निकलने वाले साथियों से। इच्छा की न पूर्ति होने पर निराशा, द्वेष की भावना - भाई - बहन में लड़ाई - तनाव - असफलता से उत्पन्न भय

बाल्यावस्था में प्रदर्शित संवेग -
बाल्यावस्था में बालक में अनेक नये संवेगों का प्रादुर्भाव होता है। इस अवस्था में बालक में प्रदर्शित होने वाले कुछ प्रमुख संवेग निम्नलिखित हैं -
1 - भय, क्रोध, ईर्ष्या, आकुलता, स्नेह, हर्ष, प्रेम प्रसन्नता।

~~[illegible]~~

संवेगों के प्रकार :-
राग पर आधारित - प्रेम, करुणा, दया, आनन्द आदि (Melody, Amusement)
द्वेष पर आधारित - क्रोध, घृणा, भय आदि (Anger, Digust, Fear)
मैक्डूगल के अनुसार - 14 - भय, घृणा, क्रोध, आश्चर्य, काम, दया, आत्महीनता, आत्माभिमान, एकाकी भाव, सन्तुष्टि, दुःख, अधिकार भावना, रचना, भूख, आमोद। (Amusement) (खुशी मनाना, हँसी करना) उल्लास

Language
Knowledge

बाल्यावस्था में संवेगों की विशेषताएं -
इस अवस्था में बालकों के संवेग प्रौढ़ों से काफी भिन्नता रखते हैं। इनके संवेगों में अनेक विशेषताएं पायी जाती हैं जो इस प्रकार हैं -
अल्प कालिक संवेग - बाल्यावस्था में बालकों के संवेग क्षणिक होते हैं। उनके संवेगों में स्थायित्व का अभाव होता है। इनके संवेग कुछ मिनट तक ही प्रदर्शित होते हैं, उसके बाद समाप्त हो जाते हैं।

तीव्रता- यद्यपि इस अवस्था में बालक के संवेग लघु कालिक होते हैं तथापि उनमें तीव्रता अधिक पायी जाती है। इस अवस्था के बालक अपने संवेगों का प्रदर्शन अत्यंत द्रुत गति से करते हैं। जैसे - यदि बालक में भय का संवेग उत्पन्न होता है। तो उसमें अपने भय को छिपाने की क्षमता नहीं होती है, वह तुरन्त प्रदर्शित कर देते हैं।

परिवर्तनशीलता- इस अवस्था में बालकों के संवेग शीघ्र ही परिवर्तित भी हो जाते हैं। उनमें हँसने, रोने, मुस्कुराने, ईर्ष्या, प्रेम आदि संवेग जितनी जल्दी उत्पन्न होते हैं उतनी ही शीघ्रता से परिवर्तित भी हो जाते हैं।

मूल प्रवृत्ति → संवेग

1- पलायन (Escape) _ fear भय
2- युयुत्सा (Combat) _ Anger क्रोध
3- निवृत्ति (Repulsion) _ Disgust घृणा
4- पुत्रकामना / शिशुरक्षा (Parental) — Love वात्सल्य ([illegible]) प्रेम
5- शरणागत (Apeal) _ Distress करुणा (दया) (विषाद)
काम 6- काम प्रवृत्ति (Sex) _ Lust कामुकता
7- जिज्ञासा (Curiosity) _ Wonder आश्चर्य
दैन्य 8- दीनता (Submission) _ Negative Self-feeling आत्महीनता
9- आत्मगौरव (Self-assertion) _ Positive Self feeling आत्माभिमान (श्रेष्ठता की भावना)
10- सामूहिकता (Gregariousness) Feeling of loneliness अकेलापन (एकाकीपन)
(भोजन-अन्वेषण) 11 भोजनान्वेषण (Food-Seeking) Appetite भूख
12- संग्रह (Acquisition) _ feeling of ownership अधिकार (स्वामित्व की भावना)
(रचनात्मक) 13- रचना (Construction) — feeling of creativeness कृति (संरचनात्मक भावना)
(हास) 14- हास्य/हास (Laughter) — Amusement मनोविनोद (आमोद)

मूल प्रवृत्ति — सम्बन्धित संवेग

1 पलायन (Escape) — भय (fear)
युयुत्सा (Combat) क्रोध (Anger)
2 निवृत्ति (Repulsion) घृणा (Disgust)
3 जिज्ञासा (Curiosity) आश्चर्य (wonder)
4 शिशुरक्षा (Parental) वात्सल्य (Love)
5 शरणागति (Apeal) विषाद (Distress)
6 रचनात्मक (Construction) संरचनात्मक भावना (feeling of creativeness)
7 संग्रह प्रवृत्ति (Acquisition) स्वामित्व की भावना (feeling of ownership)
8
9 सामूहिकता (Gregariousness) एकाकीपन (feeling of loneliness)
10

Desire to be praised.
The tendency of social imitation becomes strong.
Mutual cooperation Courage.
Responsibility
Self control
Fairness
The feeling of public respect is found more
develop leadership qualities
more tendency to play games in an organized manner

बाल्यावस्था और सामाजिक विकास -

बाल्यावस्था में बच्चों की सामूहिकता की मूल प्रवृत्ति (Instinct of Gregariousness) अधिक क्रियाशील होती है। वे अपने साथियों के साथ रहना पसन्द करते हैं और साथ ही किसी भी सामाजिक समारोह में सम्मिलित होना चाहते हैं। इस समय वे जिस समाज के बीच जाते हैं, उसी के व्यवहार प्रतिमानों एवं नैतिक मूल्यों को अपनाते हैं और उनके समाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से होती है, अर्थात उनका सामाजिक विकास तेजी से होता है।

इस अवस्था में नेता बनने की भावना अधिक दिखाई देती है। अच्छे गुणों के आधार पर वह प्रशंसा का पात्र बन जाता है। बालक अच्छे एवं बुरे किसी भी समूह के सदस्य बन सकते हैं। अच्छे कार्यों में लिप्त समूह को समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त होती है तथा अवांछित कार्यों में लीन समूह समाज में निंदा का पात्र होता है।

बाल्यावस्था की दूसरी विशेषता यह है कि इस अवस्था में बच्चे प्रेम के विरुद्ध द्वेष, सहयोग के विरुद्ध असहयोग अर्थात सकारात्मक व्यवहार के साथ नकारात्मक व्यवहार भी करने लगते हैं। उत्तर बाल्यावस्था में बच्चे अपने समूह के साथियों से स्वीकृति (Acceptance) पाने के बड़े इच्छुक होते हैं इसलिए वे अपने समूह के अनुसार व्यवहार करते हैं। इस आयु के बच्चों में प्रतिस्पर्धा की भावना भी बड़ी तीव्र होती है, वे एक-दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं। जो बच्चे अपने समूह में अपना वर्चस्व बनाना चाहते हैं वे उसकी प्राप्ति के लिए कभी-कभी अन्यथा आचरण भी करते हैं, लड़ाई-झगड़े तक करते हैं और ये सब सामाजिक अन्तः क्रिया के तत्व होते हैं। ~~सच पूछिए~~ सही कहें तो बच्चों का सामाजिक विकास अपने सही अर्थों में इसी अवस्था में होता है।

जैसे- प्रशंसा पाने की इच्छा रखते हैं। सामाजिक अनुकरण की ~~इच्छा~~ प्रवृत्ति दृढ़ हो जाती है। सामाजिक गुणों का विकास होता है जैसे- सहनशीलता, आज्ञाप्रियता, सद्भावना, परस्पर सहयोग साहस, उत्तरदायित्व, आत्मनियंत्रण, न्यायप्रियता इत्यादि सार्वजनिक सम्मान की भावना अधिक पाई जाती है। नेतृत्व के गुण विकसित हो संगठित रूप से खेल खेलने की प्रवृत्ति अधिक होती है।

Childhood & Education

बाल्यावस्था और शिक्षा

शैशवावस्था में बच्चे बहुत तीव्र गति से सीखते हैं और बहुत अधिक सीखते हैं पर उनके सीखने का क्षेत्र बहुत सीमित होता है। इसकी अपेक्षा वे बाल्यावस्था में कम गति से सीखते हैं और कम सीखते हैं पर उनके सीखने का क्षेत्र विस्तृत होता है। फिर इस अवस्था में उनका शैशवावस्था में अर्जित ज्ञान स्थायी होता है और इस काल में भी वे जो कुछ सीखते हैं वह सब भी स्थायी होता है, इस काल में वे जो बन जाते हैं उसमें बहुत कम परिवर्तन किया जा सकता है।

ब्लेयर, जोन्स और सिम्पसन के शब्दों में — 'बाल्यावस्था वह अवस्था Blair, Jones & Simpson है जिसमें व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोणों, मूल्यों और आदर्शों का बहुत बड़ी सीमा तक निर्माण हो जाता है।'
Childhood is the time when the individuals basic outlooks, values & ideals are to a great extent shaped. — साफ जाहिर है कि शिक्षा की दृष्टि से बाल्यावस्था का अपना महत्व है। मनोवैज्ञानिक की दृष्टि से बाल्यावस्था के बच्चों की शिक्षा का विधान मनोविज्ञान के अनुसार, कुछ अपने प्रकार से करना आवश्यक होता है।

बाल्यावस्था और शिक्षा के उद्देश्य →

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से बाल्यावस्था में बच्चों के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास के आधार पर उनकी शिक्षा के निम्नलि. उद्देश्य है —

1. बच्चों के शारीरिक विकास में सहायता करना।
2. बच्चों के मानसिक योग्यताओं (चिन्तन, तर्क, विश्लेषण, संश्लेषण और समस्या-समाधान के विकास में सहायता करना।
3. बच्चों को वास्तविक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न विषयों का सामान्य ज्ञान कराना।
4. बच्चों के मूलभूत संवेगों का विकास करना और उन्हें उन पर नियन्त्रण करने में प्रशिक्षित करना।
5. बच्चों के सामाजिक विकास को उचित दिशा प्रदान करना।
6. बच्चों में अच्छी आदतों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का निर्माण कर उनका नैतिक विकास करना।
बच्चों में समाज एवं राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना विकसित करना।

संश्लेषण का अर्थ है - अनेकों को एक करना
विश्लेषण का अर्थ है - एक को अनेक करना (संश्लेषित या एक ही वस्तु को अलग-अलग करके उसकी विवेचना करना है। संश्लेषण को तोड़-तोड़ हिस्सों में तोड़ना है सम्पूर्ण के भिन्न-भिन्न हिस्सों को तोड़कर उनका बारीकी से अध्ययन करने को ही विश्लेषण कहा जाता है।

संश्लेषण → अलग-अलग वस्तुओं अथवा भागों को एकत्रित करने की प्रक्रिया। इस विधि का कार्य विश्लेषण के बाद ही शुरू होता है।

बाल्यावस्था और शिक्षा की पाठ्यचर्या:-

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से किसी भी स्तर के बच्चों की शिक्षा की पाठ्यचर्या का निर्माण उनकी रुचि, रुझान और योग्यता के आधार पर करना चाहिए। साथ ही वह वास्तविक और सार्थक होनी चाहिए। उनकी दृष्टि से बाल्यावस्था पर शिक्षा की पाठ्यचर्या इस प्रकार होनी चाहिए-

1- शारीरिक विकास के लिए पोषण सम्बन्धी जानकारी और खेलकूद एवं व्यायाम।
2. मानसिक विकास के लिए मातृभाषा, कोई अन्य महत्वपूर्ण भाषा और गणित
3- सामान्य ज्ञान के विकास के लिए मातृभाषा, सामाजिक विज्ञान, गणित और विज्ञान
4- संवेगात्मक विकास एवं संवेग नियन्त्रण के लिए सामूहिक कार्य एवं सहपाठ्यचारी क्रियाएँ।
5- सामाजिक विकास के लिए समूह कार्य, खेल-कूद एवं सहपाठ्यचारी क्रियाएँ
6- नैतिक विकास के लिए दैनिक सभा, प्रार्थना, प्रवचन, आदर्श व्यवहार, उद्देश्यपूर्ण कहानियाँ एवं धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा।
7- समाज एवं राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना विकसित करने के लिए प्रेम एवं समर्पण से पूर्ण कहानियाँ, समाज सेवा एवं अन्य आदर्श प्रदर्शन।

✓

बाल्यावस्था और शिक्षण विधि

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से इस अवस्था के बच्चों की शिक्षा के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग करना चाहिए और विधियों का चयन बाल्यावस्था की विशेषताओं को ध्यान में रखने के साथ-साथ पढ़ाए जाने वाले विषय और सिखाए जाने वाली क्रियाओं के स्वरूप को भी ध्यान में रखकर करना चाहिए। उनकी दृष्टि से 6 से 9 वर्ष तक के बच्चों के लिए खेल, अवलोकन, कहानी, नाटक विधियों का प्रयोग करना चाहिए।
9 से 12 वर्ष के बच्चों की शिक्षा के लिए बच्चों के साथ-साथ विषय की प्रकृति का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भाषा शिक्षण में गद्य एवं पद्य (गद्य-पद्य, निबंध, कहानी, उपन्यास, लेख आदि) (पद्य-कविता, काव्य, गाने, भजन) रचनाओं को अनुदेशन प्रणाली से रचना कार्य को प्रश्नोत्तर प्रणाली से और व्याकरण के नियमों का विकास आगमन एवं निगमन (क्रमश) प्रणाली से

आगमन विधि → पहले उदाहरण फिर नियम (अन्य नाम – उदाहरण से नियम की ओर, ...
विशिष्ट से सामान्य, ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर
प्रतिपादक → अरस्तु (एकांत वाली शिक्षण विधि)

निगमन विधि → अरस्तु (प्रतिपादक) (यह विधि विज्ञान व गणित शिक्षण के लिए अत्यन्त उपयोगी है।
पहले नियम फिर उदाहरण

करना चाहिए। गणित शिक्षण हेतु आगमन-निगमन एवं संश्लेषण-विश्लेषण विधियों का प्रयोग करना चाहिए। विज्ञान शिक्षण हेतु अवलोकन एवं प्रयोग प्रदर्शन को अपनाना चाहिए। इतिहास एवं भूगोल शिक्षण हेतु भ्रमण एवं अवलोकन को महत्व देना चाहिए। जहाँ सम्भव हो ऐतिहासिक स्थानों एवं घटनाओं और भौगोलिक तथ्यों की वीडियो कैसेट द्वारा टेलीविजन पर दिखाना चाहिए। सुनने की अपेक्षा देखकर प्राप्त किया ज्ञान अधिक स्थायी होता है। बाल्यावस्था में बच्चे में बच्चे भ्रमण में बड़ी रुचि लेते हैं, अपने जीवन से सम्बंधित वास्तविक कार्यों को सम्पादित करने में बड़ी रुची लेते हैं और किसी भी कार्य को मिल-जुलकर पूरा करने में बड़ी रुचि लेते हैं। ये सब अवसर प्रोजेक्ट विधि (Project Method) में होते हैं इसलिए वर्ष में दो-चार प्रोजेक्ट पूरे करना उपयुक्त (क्रियात्मक) रहता है।

बाल्यावस्था और अनुशासन → मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से बच्चे किसी भी प्रकार के दण्ड को अच्छा नहीं समझते, वे व्यर्थ के उपदेशों में भी विश्वास नहीं करते, अतः उन्हें व्यवस्थित एवं अनुशासित करने के लिए आदर्श आचरण प्रस्तुत करना चाहिए, ~~उन्हें व्यवस्थित~~ और उनके साथ प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

बाल्यावस्था और शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्ध → मनोवैज्ञानिकों के अनुसार शिक्षकों को शिक्षार्थियों के साथ प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार करना चाहिए, उन्हे अभिव्यक्ति के स्वतन्त्र अवसर देने चाहिए और उनकी जिज्ञासा एवं समस्याओं का तुरन्त समाधान करना चाहिए।

बाल्यावस्था और विद्यालय → बाल्यावस्था में बच्चों के संवेग स्थिर होते हैं, उनके आदर्श, विश्वास और मूल्य निश्चित होते हैं इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालय भौतिक दृष्टि से सम्पन्न होने के साथ-साथ सांस्कृतिक दृष्टि से भी सम्पन्न हो, उनका पर्यावरण ऐसा होना चाहिए कि बच्चों में वांछित आदर्श, विश्वास और मूल्यों का विकास हो।

बाल्यावस्था और अभिभावकों की भूमिका:-> मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जन्म से 3 वर्ष के बच्चों के विकास का 100% उत्तरदायित्व उनके माता-पिता (अभिभावकों) पर होना चाहिए। 3 से 6 वर्ष के बच्चों की शिक्षा एवं विकास का उत्तरदायित्व 50% अभिभावकों पर और 50% शिक्षक-शिक्षिकाओं पर होना चाहिए और बाल्यावस्था (6 से 12 वर्ष) के बच्चों की शिक्षा का उत्तरदायित्व 75% शिक्षकों पर और 25% अभिभावकों पर होना चाहिए। वे अपने पालन-पोषण के साथ उनके बहुमुखी विकास के लिए प्रयत्नशील हों।

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप:->

बाल्यावस्था बालक के जीवन की आधारशिला होती है। अतः यह आवश्यक है कि बालक के विकास के सभी पक्षों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा की व्यवस्था की जाये क्योंकि शिक्षा एवं विकास एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित हैं। अतः बालक की शिक्षा की उचित व्यवस्था का दायित्व न केवल शिक्षक पर वरन् माता-पिता तथा समाज पर भी है। उनकी शिक्षा व्यवस्था करते समय नि० लि० बातों पर ध्यान देना चाहिए-

1. शारीरिक विकास पर ध्यान
2. बाल मनोविज्ञान
3. मानसिक स्तर ध्यान
4. संवेगात्मक विकास पर ध्यान
5. सामूहिक प्रवृत्ति का विकास
6. सामाजिक गुणों का विकास
7. रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास

बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएँ (Main characteristics of childho

बाल्यावस्था के बच्चों के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास की दृष्टि से उनमें निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं।-

(1) शारीरिक विकास में स्थायित्व Stability in Physical growth
(2) मानसिक योग्यताओं में विकास Dof mental abilities
(3) रुचियों में परिवर्तन change in interests
(4) बहिर्मुखी व्यक्तित्व Extrovert Personality
(5) वास्तविक जगत में रुचि Interest in the real world
(6) आत्म निर्भरता (Self Dependence
(7) सृजनात्मकता का विकास D of Creativity
(8) संवेगों पर नियंत्रण (Control on Emotions
(9) सामाजिक विकास
(10) नैतिक विकास (Moral development)
(11) नई चीजों को सीखने में रुचि (Interest in Learning New things)